OUR PUBLICATIONS

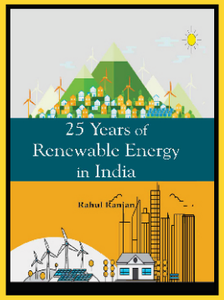

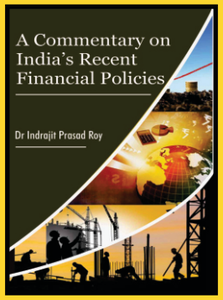

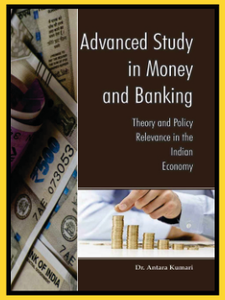

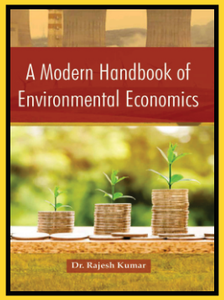

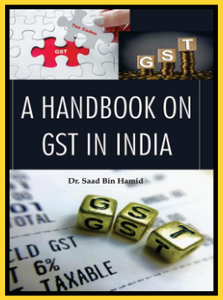

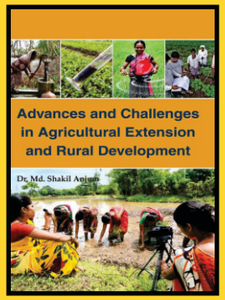

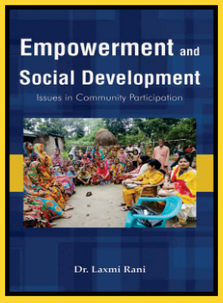

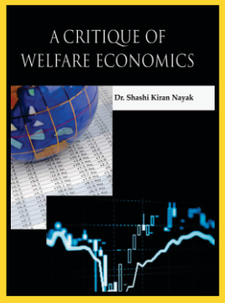

Iobus Press

448, Pocket-V, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110091 (INDIA)
Ph.: 011-22753916

ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 12 अंक 6 नवंबर-दिसंबर 2020

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Refereed Hindi Language Journal

IMPACT FACTOR : 5.051

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

प्रधान संपादक

डॉ. अश्विनी महाजन

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपादक

डॉ. प्रसून दत्त सिंह

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी

डॉ. फूल चन्द

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

दृष्टिकोण प्रकाशन

दृष्टिकोण

कैंसर रोगियों के दर्द, चिंता और अवसाद के रोगलक्षण पर संगीत चिकित्सा का मनोवैज्ञानिक प्रभाव–श्रीमती संध्या कुमारी 3474

जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों की रोकथाम और उपचार पर जोर देने के साथ आयुर्वेदिक आहार और पोषण संबंधी सिद्धांतों की आलोचना –पूजा त्रिपाठी; श्रीमती संध्या कुमारी 3477

छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग-भिलाई नगरों की कार्यशील महिलाओं का आर्थिक स्तर–शिवेन्द्र बहादुर 3487

भारत में संघवाद के विकास में विभिन्न आयोग व समितियों की भूमिका–डॉ० अशोक कुमार यादव; मनीषा 3494

हिंदी साहित्य के विकास में छत्तीसगढ़ के साहित्यकारों का योगदान–डॉ० बृजेन्द्र पाण्डेय 3497

सामाजिक-राजनीतिक अलगाव के संदर्भ में गाँधीजी एवं विनोबा के विचार: एक विश्लेषण–डॉ० अरविन्द कुमार सिंह 3502

पुस्तकालय कर्मचारियों के प्रति उपयोगकर्ता का रवैया और संतुष्टि का स्तर ई-संसाधन के उपयोग मे: एक अध्ययन–डॉ० कन्हैया लाल शर्मा 3506

"महाभारत में प्राप्त साख्य एवं योग दर्शन सम्बन्धी अहंकार (महत्) इन्द्रिय वर्ग एवं तन्मात्रादि का विश्लेषण"–डॉ० सत्यप्रिय आर्य; मुकेश कुमार 3509

ग्रामीण विकास योजनाओं के संचालन में पंचायतीराज संस्थाओं की भूमिका का अवलोकन: छत्तीसगढ़ के सन्दर्भ में –श्रीमती राजेश्वरी बिसेन; डॉ. ए. के उपाध्याय 3514

गुरुगौरवीयम् महाकाव्य में रस तत्त्व विवेचन–डॉ० ललित कुमार गौड; लक्ष्मी कुमारी 3518

मुगलकालीन चित्रकला का भारतीय संस्कृति पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन–डॉ० अरविन्द कुमार यादव 3523

स्वतंत्रता संग्राम और नारी शक्ति–डॉ० ममता चावला 3526

स्वतंत्रता संग्राम और नारी शक्ति

डॉ० ममता चावला

देश हित को मिट सकूं, ऐसी मेरी तकदीर हो
चाहे हाथ में हो हथकड़ी, चाहे पैर में जंजीर हो,
यह जो उठ चुके हैं यह कदम आगे ही बढ़ते जाएंगे,
सूली चढ़े, फांसी चढे स्वतंत्रता हम पाएंगे।

स्वतंत्रता हम सब का जन्मसिद्ध अधिकार है। यह प्रतीक है-हमारे उत्कर्ष का, हमारे सम्मान का। स्वतंत्रता का अभाव मनुष्य की प्रगति का सबसे बड़ा रोड़ा है। स्वतंत्रता किसी भी देश की समग्र विकास की आधारशिला है और वहां के नागरिकों के जीवन की नींव है। आज हमारा देश स्वतंत्र है, पर यह स्वतंत्रता इसे इतनी आसानी से नहीं मिली है न जाने कितने वीरों-वीरांगनाओं का बलिदान, उनकी कुर्बानियां, इसमें शामिल हैं। इन लोगों ने देश को परतंत्रता को बेड़ियों से मुक्ति दिलाने के लिए अपना जीवन, देश को समर्पित कर दिया। कई लोग फांसी के फंदे पर झूले, कई लोगों ने कठोर कारागार की पीड़ा झेली, कई लोगों ने अपने जीवन के अमूल्य वर्ष स्वतंत्रता के लिए लड़ते लड़ते न्योछावर कर दिए। माताओं ने अपनी ममता समर्पित की, बहनों ने हंसते-हंसते अपने अपनी राखी को विदाई दी और भारत की असंख्य वीरांगनाओं ने इस आंदोलन में सम्मिलित होने के लिए अपने सुहाग की आहुति दे डाली। इस लड़ाई में कोई भी पीछे नहीं था। सभी कंधे से कंधा मिलाकर एक दूसरे को प्रेरित कर रहे थे क्या युवा, क्या बूढ़े, क्या महिलाएं, पत्रकार, साहित्यकार सभी केवल एक ही प्रयास में थे कि देश को किस प्रकार से स्वतंत्र कराया जा सकता है। 1857 से 1947 तक के इस लंबे क्रांतिकारी यज्ञ में अपनी राजनीतिक, ध ार्मिक, आर्थिक और सांस्कृतिक मुक्ति के लिए न जाने कितने वीरों ने अपने प्राणों की आहुति दी हैद्य क्रांति के दीवानों के मन में सिर्फ एक ही भाव था-

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है
देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है।

भारतीय स्वतंत्रता का गहरा नाता उसके इतिहास से भी है। भारतीय संस्कृति का अनूठापन हमेशा से ही सब के लिए आकर्षण का केंद्र रहा है। सोने की चिड़िया कहलाने वाले देश की समृद्धि, उसका वैभव, लालची आक्रमणकारियों को हमेशा ही अपनी और लालायित करता रहा। अपने लालच को पूरा करने के लिए वे आततायी बार-बार भारत पर आक्रमण करते रहे। यह सिलसिला 11वीं से 19वीं शताब्दी तक चलता रहा और 19 वीं शताब्दी तक भारत पराध ीनता के चक्कर में पूरी तरह से फंस गया। इनमें से अधिकतर विदेशी आक्रमणकारी, भारत की संस्कृति, परंपरा, दार्शनिकता और धार्मिकता से प्रभावित होकर भारत के ही होकर रह गए। "अंग्रेज पहले विजेता थे जिनकी हिंदुस्तान की सभ्यता तक पहुंच नहीं थी। उन्होंने ग्राम समाज की जड़े हिलाकर, भारतीय उद्योग धंधों को नष्ट करके इस सभ्यता का नाश कर दिया।"[1]

किसी भी शासन के अन्याय या जनता के दमन का चक्र जब सीमा लांघ जाता है, तब क्रांति अवश्य होती है। 1857 की क्रांति भी एक ऐसी युगांत कारी घटना थी, जिसने भारतीय इतिहास के प्रवाह को एक नया मोड़ दिया। इसे भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम, सैनिक विद्रोह, हिंदी मुस्लिम संगठित संघर्ष आदि के नाम से पुकारा जाता है। "भारत का यह स्वाधीनता संग्राम अंग्रेजों की शोषक और बर्बर नीतियों का परिणाम था। यही नहीं इसमें उस समय की आम जनता, किसान, काश्तकार, कारीगर इत्यादि और हिंदुस्तानी सिपाहियों ने भी भाग लिया। यह महज एकाएक फूट पड़ने वाला सिपाही विद्रोह नहीं था, बल्कि घोर आर्थिक दरिद्रता में घनघोर शारीरिक यंत्रणा सहन करती हुई उस जनता के मन में धड़क रहा गहरा असंतोष था, जो अंग्रेजों के अत्याचार से त्रस्त थी।"[2]

स्वतंत्रता आंदोलन के इस यज्ञ में वीरों के साथ-साथ वीरांगनाओं ने भी बड़ी संख्या में अपना सहयोग देकर यह साबित कर दिया कि समय आने पर महिलाएं प्रेम की पुकार को, क्रांति के बिगुल में तब्दील कर, राष्ट्र के सम्मान को बचाने के लिए अपना सब कुछ समर्पित कर सकती हैं। इस स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं का योगदान अपने आप में एक अपूर्व उपलब्धि के रूप में देखा जा सकता है क्योंकि उनका सामाजिक उत्थान अभी-अभी हुआ था। बहुत सी महिलाओं ने प्रत्यक्ष रूप से इस समर में भाग लेकर, और अनेकों ने अन्य तरीके से इस आंदोलन में अपनी सक्रिय भूमिका निभाई है। आजादी की लड़ाई में उनकी भूमिका स्पष्ट करते हुए यह कहा गया है कि "भारत की आजादी की लड़ाई में महिलाओं ने कई स्तरों पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हम कभी उन्हें 1857 की लड़ाई में मैदानों में वीरांगनाओं के रूप में देखते हैं, तो कभी भारत छोड़ो आंदोलन के सत्याग्रहियों के रूप में लाठी झेलते हुए देखते है। कभी हम उन्हें आजाद हिंद फौज की झांसी की रानी रेजिमेंट में बर्मा के जंगलों में युद्ध की तैयारी करते हुए देखते हैं, तो कभी बंगाल के क्रांतिकारी आंदोलन में साहसी हमले करते हुए देखते हैं। सत्याग्रह में विदेशी कपड़ों के बहिष्कार और शराब की दुकानों के विरोध में उनका विशेष महत्व था ।इन धरनो में उन्होंने बहुत ही हिम्मत से योगदान दिया। बंगाल के क्रांतिकारी आंदोलन में भी युवतियों की विशेष भूमिका देखी गई।"[3]

इतिहास साक्षी है भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम सैकड़ों बहादुर महिलाओं की कुर्बानी और प्राण न्यौछावर करने की दास्तानओं को समेटे हुए है। स्वतंत्रता संग्राम में केवल मर्दों ही नहीं महिलाओं ने भी नेतृत्व कारी भूमिका निभाई है। इन वीरांगनाओं की कुर्बानियां और और बलिदान का जिक्र किए बिना 1857 से 1947 के स्वाधीनता संग्राम की दास्तान अधूरी ही कही जाएगी।